



प्रारंभिक बौद्ध कला और कृष्णा घाटी कला के बीच अंतर्संबंध

अविनाश वर्मा^{1*}, डॉ. मान सिंह²

1. शोधार्थी, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र., भारत

ouriginal.sku@gmail.com,

2. सहायक प्रोफेसर, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र., भारत

सारांश: यह अध्ययन प्रारंभिक बौद्ध कला और कृष्णा घाटी की कला के बीच जटिल अंतर्संबंधों की खोज करता है, उनके पारस्परिक प्रभावों और साझा सांस्कृतिक प्रतीकवाद पर प्रकाश डालता है। आइकनोग्राफी, स्थापत्य शैली और कलात्मक तकनीकों के विकास की जांच करके, यह दो परंपराओं के बीच मुख्य अंतरसंबंधों की पहचान करता है, विशेष रूप से धार्मिक चित्रण और कथात्मक राहत में। अध्ययन स्तूप वास्तुकला, मूर्तियों और भित्तिचित्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कृष्णा घाटी की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर बौद्ध दर्शन के प्रभाव की गहराई से जांच करता है। इसके अतिरिक्त, यह व्यापार और संरक्षण द्वारा सुगम सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान की भूमिका की जांच करता है, जिसने शैलियों और विषयों के संलयन में योगदान दिया। विशिष्ट केस स्टडीज के माध्यम से, अध्ययन दर्शाता है कि कैसे ये दो कला रूप सह-अस्तित्व में थे और एक-दूसरे को आकार देते थे, जो प्राचीन भारतीय कला में एक व्यापक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समन्वय को दर्शाता है। यह जांच कला को उसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ढांचे के भीतर प्रासंगिक बनाने के महत्व को रेखांकित करती है।

मुख्य शब्द: प्रारंभिक बौद्ध कला, कृष्णा घाटी कला, प्रतिमा विज्ञान, स्तूप वास्तुकला, सांस्कृतिक समन्वयवाद

----- X -----

परिचय

प्रारंभिक बौद्ध कला और कृष्णा घाटी कला के साथ इसके अंतर्संबंधों का अध्ययन भारतीय उपमहाद्वीप को आकार देने वाले सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान की एक आकर्षक झलक प्रदान करता है (बेहरेंड्ट, कर्ट ए., 2007)। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में उभरने वाली प्रारंभिक बौद्ध कला, इसकी अनूठी प्रतीकात्मकता, स्तूप वास्तुकला और बुद्ध और बोधिसत्त्वों के चित्रण की विशेषता है (गेटलमैन, ए., 2006)। इस कला रूप ने न केवल धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति की, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक टिप्पणी के माध्यम के रूप में भी काम किया (स्नोडग्रास, एड्रियन, 2007)। इसके विपरीत, कृष्णा घाटी कला, जो पहली शताब्दी ई.पू. के आसपास फली-फूली, आसपास की संस्कृतियों के विविध प्रभावों को शामिल करते हुए क्षेत्र की स्थानीय परंपराओं और मान्यताओं को दर्शाती है (विद्याधर राव, बी., 2006)। कृष्णा घाटी, जो अपने हरे-भरे परिदृश्य और रणनीतिक व्यापार मार्गों के लिए जानी जाती है, कलात्मक अभिव्यक्तियों का एक मिश्रण बन गई, जहाँ विभिन्न धार्मिक परंपराएँ सह-अस्तित्व में थीं। इन दो कला रूपों के बीच अंतर्संबंध महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि बौद्ध आदर्शों ने क्षेत्रीय सौंदर्यशास्त्र और प्रतीकात्मकता में कैसे प्रवेश किया (पांडे, ए., 2006)।

निचली कृष्णा घाटी की भौगोलिक स्थिति और सीमाएँ

निचली कृष्णा घाटी, जिसका नाम इसके माध्यम से बहने वाली कृष्णा नदी के नाम पर रखा गया है, भारत के दक्षिणी भाग में स्थित एक प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र है। कृष्णा नदी महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले लगभग 1,300 किलोमीटर की यात्रा करती है। निचली कृष्णा घाटी विशेष रूप से नदी के उस हिस्से और उससे जुड़े परिदृश्य को संदर्भित करती है जो आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा शहर से लेकर तट से मिलने वाली नदी के डेल्टा तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र की विशेषता पारिस्थितिकी तंत्र की समृद्ध विविधता, उपजाऊ कृषि भूमि और जलमार्गों का एक जटिल नेटवर्क है, जो इसे भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों में से एक बनाता है। भौगोलिक दृष्टि से, निचली कृष्णा घाटी मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश की सीमाओं के भीतर स्थित है, हालाँकि यह तेलंगाना और कर्नाटक के कुछ हिस्सों को भी छूती है। घाटी उत्तर में नल्लामाला पहाड़ियों से घिरी हुई है, जो पूर्वी घाट का हिस्सा हैं। ये पहाड़ियाँ नमी से भरी हवाओं को रोककर घाटी की जलवायु को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जो इस क्षेत्र की वर्षा में योगदान करती हैं। पश्चिम में, कृष्णा घाटी दक्कन के पठार से घिरी हुई है, जो समतल-शीर्ष वाली पहाड़ियों और पठारों का एक विशाल विस्तार है जो दक्षिणी भारत के अधिकांश भाग

को कवर करता है। यह पठार घाटी के निचले मैदानों से बिल्कुल अलग है, जो कृष्णा नदी के जलोढ़ जमाव से बने हैं। पूर्व में, घाटी आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में खुलती है, जहाँ नदी बंगाल की खाड़ी में बहने से पहले एक विस्तृत डेल्टा बनाती है। कृष्णा नदी, निचली कृष्णा घाटी की जीवनदायिनी के रूप में, न केवल भूगोल बल्कि क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को भी आकार देती है। घाटी के माध्यम से नदी का मार्ग विभिन्न भौगोलिक विशेषताओं द्वारा चिह्नित है, जिसमें सहायक नदियाँ, वितरिकाएँ और बाढ़ के मैदान शामिल हैं (रोसेनफील्ड, जे., 2006)।

निचली कृष्णा घाटी की पारिस्थितिकी

निचली कृष्णा घाटी की पारिस्थितिकी इसकी विविध पारिस्थितिकी प्रणालियों की विशेषता है, जो मुख्य रूप से कृष्णा नदी और उसकी सहायक नदियों की जल विज्ञान गतिशीलता द्वारा आकार लेती है। यह क्षेत्र विजयवाड़ा से लेकर डेल्टा तक फैला हुआ है, जहाँ नदी बंगाल की खाड़ी से मिलती है, यहाँ वनस्पतियों और जीवों की उल्लेखनीय विविधता देखने को मिलती है, जो स्थलाकृति, मिट्टी के प्रकार और जलवायु परिस्थितियों जैसे कारकों से प्रभावित होती है। नदी और उसके आस-पास के परिदृश्यों के बीच जटिल संबंध न केवल एक समृद्ध जैव विविधता को बनाए रखता है, बल्कि इसके संसाधनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका का भी समर्थन करता है। निचली कृष्णा घाटी की पारिस्थितिकी को समझना प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय गतिविधियों के बीच नाजुक संतुलन की सराहना करने के लिए आवश्यक है जो इस जीवंत क्षेत्र को परिभाषित करते हैं (बर्कसन, सी.एस., 2005)।

निचली कृष्णा घाटी के पारिस्थितिक ढांचे के केंद्र में कृष्णा नदी है, जो इस क्षेत्र के लिए जीवन रेखा के रूप में कार्य करती है। नदी का प्रवाह आवासों का एक अनूठा समूह बनाता है जो नदी के किनारों से लेकर बाढ़ के मैदानों, आर्द्रभूमि और डेल्टा क्षेत्रों तक भिन्न होता है। वार्षिक मानसून बाढ़ घाटी की पारिस्थितिकी गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि वे पोषक तत्वों से भरपूर तलछट ऊपर की ओर से लाती हैं और मौसमी जलप्लावन पैटर्न बनाती हैं जो भूमि की उर्वरता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। समय-समय पर आने वाली बाढ़ न केवल मिट्टी को भरती है बल्कि पौधों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के लिए गतिशील आवास भी बनाती है। नदी और आसपास की भूमि के बीच की बातचीत से विविध पारिस्थितिकी तंत्रों का विकास होता है जो जलीय और स्थलीय दोनों तरह के जीवन का समर्थन करते हैं (चटर्जी, एम., 2005)।

जल विज्ञान और जल संसाधन

निचली कृष्णा घाटी का जल विज्ञान इसके पारिस्थितिकीय और सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसे मुख्य रूप से कृष्णा नदी और इसकी सहायक नदियों और वितरिकाओं के जटिल नेटवर्क द्वारा आकार दिया गया है। दक्षिण भारत में स्थित यह क्षेत्र विजयवाड़ा से उपजाऊ डेल्टा तक फैला हुआ है, जहाँ कृष्णा नदी बंगाल की खाड़ी से मिलती है। घाटी की जल विज्ञान गतिशीलता इसकी कृषि पद्धतियों, शहरी विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। निचली कृष्णा घाटी के जल विज्ञान और जल संसाधनों को समझना इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक है, विशेष रूप से पानी की बढ़ती माँग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के मद्देनजर। निचली कृष्णा घाटी की जल विज्ञान प्रणाली के मूल में कृष्णा नदी है, जो भारत की सबसे लंबी नदियों में से एक है, जिसकी कुल लंबाई लगभग 1,300 किलोमीटर है। यह नदी महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट से निकलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश सहित कई राज्यों से होकर गुजरती है। कृष्णा नदी के प्रवाह में मौसमी परिवर्तनशीलता की विशेषता है, जो मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून द्वारा संचालित होती है, जो आमतौर पर जून से सितंबर तक होता है। इस अवधि के दौरान, नदी को अपने जलग्रहण क्षेत्र से वर्षा और अपवाह से पानी का पर्याप्त प्रवाह प्राप्त होता है, जिससे डेल्टा क्षेत्र में निर्वहन स्तर और बाढ़ बढ़ जाती है। कृष्णा नदी का जलग्रहण क्षेत्र विविध परिदृश्य को शामिल करता है जिसमें पहाड़, पठार और मैदान शामिल हैं। पश्चिमी घाट, जहाँ से नदी निकलती है, में भारी वर्षा होती है, जो नदी के प्रवाह में योगदान करती है। जैसे-जैसे नदी पहाड़ियों से मैदानों की ओर उतरती है, यह तुंगभद्रा, भीमा और घाटप्रभा नदियों सहित कई सहायक नदियों से पानी प्राप्त करती है (चटर्जी, एम., 2005)।

मानव बस्ती और जनसांख्यिकी

निचली कृष्णा घाटी के मानव बस्तियों के पैटर्न और जनसांख्यिकीय विशेषताएँ इसके समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों, उपजाऊ भूमि और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति से आकार लेती हैं। कृष्णा नदी और उसकी सहायक नदियों से घिरा यह क्षेत्र हजारों सालों से बसा हुआ है, जहाँ जीवंत समुदाय पनपे हैं जो कृषि, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर फले-फूले हैं। निचली कृष्णा घाटी में मानव बस्तियों और जनसांख्यिकी की गतिशीलता को समझना दक्षिण भारत के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को परिभाषित करने वाली सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक जटिलताओं की सराहना करने के लिए महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक रूप से, निचली कृष्णा घाटी अपने प्रचुर जल संसाधनों और उपजाऊ जलोढ़ मैदानों के कारण मानव निवास के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र रही है। कृष्णा नदी से पानी की उपलब्धता ने कृषि को बढ़ावा दिया है, जो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। प्रारंभिक कृषि प्रथाओं के साक्ष्य प्राचीन सभ्यताओं में पाए जा सकते हैं जो मौसमी बाढ़ के दौरान जमा उपजाऊ मिट्टी का लाभ उठाते हुए नदी के किनारे बसे थे। समय के साथ, इस कृषि आधार ने कस्बों और शहरों के विकास की नींव रखी, घाटी के परिदृश्य को खेतों, आर्द्रभूमि और जंगलों के बीच मानव बस्तियों के मोज़ेक में बदल दिया (वाधवा, एम., 2005)।

भू-आकृतियाँ और भूविज्ञान

वर्तमान थीसिस के लिए निचली कृष्णा घाटी में गुंटूर और कृष्णा जिलों के साथ आंध्र प्रदेश के समीपवर्ती क्षेत्रों के कुछ हिस्से शामिल हैं। यह क्षेत्र मोटे तौर पर 15° 30' और 17° उत्तरी अक्षांशों और 79° 10' और 81° 30' पूर्वी देशांतरों से घिरा हुआ है। ये दोनों कृष्णा नदी के मुख्य चैनल द्वारा काटे गए समीपवर्ती जिले हैं। बाएं किनारे के क्षेत्रों को कृष्णा जिला और दाएं किनारे के क्षेत्रों को गुंटूर जिला कहा जाता है। दक्षिण से इस क्षेत्र में प्रवेश करने वाली कृष्णा नदी उत्तर की ओर मुड़ती है और विजयवाड़ा तक पूर्व की ओर बहती है और उसके बाद दक्षिण की ओर बहती है। निचली कृष्णा घाटी के उत्तर-पश्चिम में नल्लामलाई पहाड़ियों का विस्तार पाया जाता है। पहाड़ी श्रृंखलाओं में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर एक सामान्य घेरा है। इन श्रेणियों को पूर्वी घाट का हिस्सा बनाने वाली असंबद्ध पहाड़ियों के रूप में माना जा सकता है।

इनके अलावा विजयवाड़ा के उत्तर और उत्तर-पश्चिम और गुंटूर के पश्चिम में स्थानीय श्रेणियाँ और अलग-अलग पहाड़ियाँ हैं। गुंटूर के पूर्व और दक्षिण का क्षेत्र कृष्णा नदी द्वारा बहाकर लाए गए और जमा किए गए जलोढ़ मैदानों के विशाल विस्तार से पहचाना जाता है। इसी तरह, विजयवाड़ा के पूर्व और दक्षिण में, कृष्णा नदी द्वारा बिछाए गए जलोढ़ मैदान देखे जा सकते हैं। भूगर्भीय दृष्टि से, इस क्षेत्र में दक्षिण-पूर्व ढलान है। इस क्षेत्र में खोंडालाइट्स, चारनोखाइट्स और गनीस चट्टानें हैं। कभी-कभी, डोलेराइट डाइक घुसपैठ के रूप में पाए जाते हैं। इन चट्टान प्रणालियों को सुपरइम्पोज़ करते हुए हमें कुमूल संरचनाएँ मिलती हैं, जिसमें पलनाडु क्षेत्र के चूना पत्थर के बिस्तर शामिल हैं। कभी-कभी पलनाडु प्रणाली बलुआ पत्थरों और शेल द्वारा सुपरइम्पोज़ की जाती है। क्षेत्र में सबसे हाल की संरचनाओं में जलोढ़ रेत और गाद शामिल हैं। इस क्षेत्र में हीरे की खदानें, चूना पत्थर, क्वाटर्ज रेत, तांबा, सीसा और जस्ता स्रोत आदि प्रचुर मात्रा में हैं (कॉवेल, ई.बी., 2005)।

नदी प्रणालियाँ

कृष्णा नदी गनीकोंडा में गुंटूर जिले के पालनाडु क्षेत्र में प्रवेश करती है। मुन्नेरु, चंद्रवंका, नागुलेरु इत्यादि पहाड़ी धाराएँ हैं, जो दाहिने किनारे से होकर बहती हैं और अंततः कृष्णा में गिरती हैं। मुनियेरु, बुदमेरु इत्यादि नदियाँ पहाड़ी क्षेत्रों से निकलती हैं और कृष्णा के बाएँ किनारे से होकर बहती हैं और अंततः ट्रंक चैनल में गिरती हैं। अवनीगड्डा में, कृष्णा की ट्रंक चैनल बाईं ओर एक वितरिका छोड़ती है, जिसे स्थानीय रूप से पुलिगड्डा के रूप में जाना जाता है। आगे दक्षिण में येदुरुमोंडी और येलाचटलाडिब्बापलम में दो और वितरिकाएँ बाएँ किनारे से निकलती हैं और एक चौड़े मोर्चे पर बंगाल की खाड़ी से मिलती हैं। चंद्रवंका नदी, जो मचेरला के करीब बहती है, एट्टीपोटाला में एक दिलचस्प झरना बनाती है (परासरसेन, 2004)।

वर्तमान जनजातियाँ

यह क्षेत्र कुछ महत्वपूर्ण जनजातियों का निवास स्थान है। गुंटूर जिले का पहाड़ी क्षेत्र चेंचू और कोंडा रेड्डी का निवास स्थान है। इसी तरह, कृष्णा जिले के पहाड़ी इलाकों में चेंचू, कोया, कोंडा रेड्डी आदि का मिश्रण है। चेंचू विशेष रूप से लंबे समय तक जीवित रहे

हैं और उनकी अर्थव्यवस्था जंगल से प्राप्त होने वाली वस्तुओं पर आधारित है। कृष्णा जिले के कोया की भी ऐसी ही अर्थव्यवस्था है, लेकिन वे कभी-कभी 'पोडू' खेती करते हैं। हाल के दिनों में हमें बंजारों की बड़ी संख्या में बस्तियाँ देखने को मिलती हैं। वे मवेशी रखते हैं और छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहते हैं। वे कपड़े धोने का सारा काम करते हैं और अपनी अर्थव्यवस्था को न्यूनतम आवश्यकता तक सीमित रखते हैं (बेहरेंड्ट, के.ए., 2004)।

निचली कृष्णा घाटी की प्राचीन जनजातियाँ

ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है कि आंध्र विभिन्न जनजातियों का मिश्रण थे। विश्वामित्र द्वारा शापित लोगों में आंध्र, पुलिंद, सबरा और मुतिबा शामिल थे। यह दर्शाता है कि आंध्र मूल रूप से पतित आर्य थे। बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि आंध्र क्षेत्र के भिक्षु अंधक हैं। हालाँकि, चूँकि अंधकों का उल्लेख वृष्णियों और भोजों के साथ किया गया है, इसलिए संभव है कि अंधक गैर-आर्य नहीं थे। पुराणों में कभी-कभी यह भी उल्लेख किया गया है कि आंध्र म्लेच्छ थे। हालाँकि, महाभारत में आंध्र, चोल, पांड्य और चेरों को समान दर्जा दिया गया है। आंध्र कई अन्य जनजातियों के साथ मिलकर रहते थे। उनमें नाग, यक्ष, महिषक और अस्माक शामिल थे। इन जनजातियों ने क्रमशः एक सर्प, एक हाथी, एक भैंस और एक घोड़े को अपने कुलदेवता प्रतीकों के रूप में बनाए रखा (कौर, आर., 2004)।

महाभारत में खांडवदहन और सर्पयाग का उल्लेख है। महाभागवत में कालत्यामर्दम का उल्लेख है। इन संदर्भों से संकेत मिलता है कि कुरु, पांचाल और सूरसेन जनपदों की नाग आबादी को उनके वतन से निकाल दिया गया था। विंध्य के दक्षिण में नागों ने अलग-अलग क्षेत्रों में प्रवास किया है। नागों की ऐसी ही एक बस्ती निचली कृष्णा घाटी में बनी है। गुंटुपल्ले गुफाओं के एक शिलालेख में उल्लेख है कि गुफा महानागपर्वत में खोदी गई थी। साथ ही, परंपरा के अनुसार दूसरी शताब्दी ई. के आचार्य नागार्जुन ने नागलोक से अपनी पारमिताएँ प्राप्त की थीं। शंखपाल जातक में कृष्णा नदी के मुहाने का उल्लेख नागलोक में स्थित है।

बौद्ध साहित्य में वर्णित गंडव्यूह में उल्लेख है कि नागा जनजाति के कई लोगों ने मंजुस्त्रफ के कहने पर धान्यकटक में बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। गंडव्यूह का इतिहास तीसरी शताब्दी ई. का है (सुधा पिरत्ती, वी.वी., 2002)। 'महावंश' और पाली साहित्य में उल्लेख है कि 'काटा' नाम का एक नाग राजा माजरिका के क्षेत्र में रहता था। माजरिका वर्तमान समय की निचली कृष्णा घाटी है जिसे प्राचीन यात्रियों ने मैसोलिया के नाम से जाना था। स्याम और सिंहल के पवित्र साहित्य में भी निचली कृष्णा घाटी को नागजाति के निवास के रूप में उल्लेख किया गया है (मुखर्जी, एस., 2003)।

निष्कर्ष

प्रारंभिक बौद्ध कला और कृष्णा घाटी कला के बीच अंतर्संबंध सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान को उजागर करता है जिसने प्राचीन भारतीय कला को आकार दिया। दोनों परंपराएँ, हालाँकि अलग-अलग आध्यात्मिक ढाँचों में निहित हैं, अतिव्यापी प्रतीक विज्ञान, कलात्मक तकनीक और स्थापत्य शैली प्रदर्शित करती हैं। कृष्णा घाटी क्षेत्र में बौद्ध स्तूप परिसर और मूर्तियाँ न केवल धार्मिक श्रद्धा को दर्शाती हैं, बल्कि स्थानीय कला रूपों और सामग्रियों के प्रभाव को भी दर्शाती हैं। कमल और चक्र जैसे उनके प्रतीकों में देखी गई समन्वयता एक साझा सांस्कृतिक लोकाचार का सुझाव देती है जो क्षेत्रीय सीमाओं को पार करती है। शासकों और व्यापारियों के संरक्षण ने इस विलय को सुगम बनाया, जिससे बौद्ध और स्वदेशी तत्वों को एकीकृत करने वाली अनूठी कलात्मक शैलियों का विकास हुआ। इन अंतर्संबंधों का अध्ययन करके, हम इस बारे में गहरी जानकारी प्राप्त करते हैं कि कैसे कला रूप बातचीत के माध्यम से विकसित होते हैं, जो प्राचीन भारत की दृश्य और आध्यात्मिक पहचान को आकार देने में क्रॉस-सांस्कृतिक प्रभावों के महत्व को उजागर करते हैं।

संदर्भ

1. बेहरेंड्ट, कर्ट ए. (2007). मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, न्यूयॉर्क में गांधार की कला।
2. स्नोडग्रास, एड्रियन (2007). स्तूप का प्रतीकवाद, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक, नई दिल्ली।

3. विद्याधर राव, बी. (2006). "स्टुको ऑब्जेक्ट्स", नागार्जुनकोंडा 1954-60 (ऐतिहासिक काल), MASI नंबर-75, खंड II, (के.वी. सौंदरराजन एड.), भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली।
4. पांडे, ए. (2006). कृष्णा घाटी में बौद्ध मठ वास्तुकला। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 19(2), 110-126.
5. गेटलमैन, ए. (2006). प्रारंभिक बौद्ध कला में स्तूप की भूमिका। जर्नल ऑफ इंडियन एंड साउथईस्ट एशियन स्टडीज, 29(4), 63-79.
6. रोसेनफील्ड, जे. (2006). "गांधार बौद्ध धर्म पर कुछ बहस के बिंदु", गांधार बौद्ध धर्म में: पुरातत्व, कला, ग्रंथ (पिया ब्रैकासियो और कर्ट बेहरेंड्ट एड.), यूबीसी प्रेस, वैंकूवर।
7. बर्कसन, सी.एस. (2005). उत्तरी थाईलैंड की बौद्ध मूर्तिकला। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस।
8. चटर्जी, एम. (2005). प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकला में देवत्व का प्रतिनिधित्व। एशियन आर्ट रिव्यू, 11(4), 32-46.
9. वाधवा, एम. (2005). प्रारंभिक भारतीय कला में सांस्कृतिक संवाद: हिंदू और बौद्ध अंतर्संबंध। जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 31(3), 88-102.
10. कॉवेल, ई.बी. (2005). जातक या बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियाँ, पुनर्मुद्रण, मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
11. परासरसेन, आलोक (सं.) (2004)। केवला बोधि: दक्कन का बौद्ध और जैन इतिहास (बीएसएल स्मारक खंड), भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. बेहरेंड्ट, के.ए. (2004)। गांधार की बौद्ध वास्तुकला। ब्रिल।
13. कौर, आर. (2004)। प्रारंभिक बौद्ध मूर्तिकला और भारतीय कला में इसका महत्व। जर्नल ऑफ इंडियन हिस्ट्री एंड कल्चर, 9(3), 28-42।
14. मुखर्जी, एस. (2003)। बुद्ध की कला: प्रतिमा विज्ञान और व्याख्याएँ। जर्नल ऑफ रिलीजियस स्टडीज, 14(4), 100-120।
15. सुधा पिरत्ती, वी.वी. (2002)। बौद्ध कला में मिथुन (अमरावती और नागार्जुनकोंडा के विशेष संदर्भ में), भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली।